विद्या आश्रम

वार्षिक रिपोर्ट : अप्रैल 2007–मार्च 2008

विद्या आश्रम को शुरू होकर तीन साल हो रहे हैं। ज्ञान पर केन्द्रित बहस और गतिविधियाँ समाज के हित में हों इसके लिए विद्या आश्रम प्रयासरत है। तरह–तरह के कार्यक्रम उठाये गये हैं जिनसे किसानों, युवाओं, छोटे–छोटे बच्चों और आम लोगों के बीच ज्ञान पर आधारित नई–नई किस्म की गतिविधियों को आकार देने के मौके बने हैं। ज्ञान प्रक्रिया का समाज में विस्तार हो सभी प्रकार के ज्ञानों की समान प्रतिष्ठा हो और पूरा समाज ज्ञान की प्रक्रिया में शामिल हो इसके लिए नये–नये किस्म की गतिविधियों को आकार दिया जा रहा है। यह इस वर्ष के कार्यों की एक संक्षिप्त रिपोर्ट है।

1– भाईचारा विद्यालय :

- वाराणसी में पाँच गाँवों में **सान्ध्यकालीन विद्यालय** चलाये जा रहे हैं। जिनमें 5–10 वर्ष के बच्चे आते हैं। ये बच्चें गाँव के गरीब घरों के होते हैं। गाँव हैं– सिंहपुर, हिरामनपुर, सुल्तानपुर, घुरीपुर, भैंसोड़ी। इन गाँवों में क्रमशः कृष्णकुमार गुप्ता, मुन्नी वर्मा, गीता सिंह, चन्द्रशेखर, और राकेश पढ़ाते हैं।
- इन गाँवों में गाँव **फेरी, रैली और कथा उत्सव** के आयोजन किये गये। आश्रम द्वारा दी गयी पुस्तकों को पढ़कर बच्चे कथा उत्सव में सबके सामने कहानियाँ सुनाते हैं। फेरी और रैली में शिक्षक, गाँव के लोग, बच्चे और आश्रम के कार्यकर्ता जुलूस निकालते हैं और सभा करके सामाजिक समस्याओं पर चिंतन वार्ता करते हैं।
- हर सप्ताह एक बार भाईचारा विद्यालय के सभी शिक्षक आश्रम पर **प्रशिक्षण** के लिये आते हैं। दो घंटे वार्ता होती है और एक घंटा **श्रमदान।**

इन विद्यालयों और आयोजनों का संयोजन बबलू कुमार और संदीप मौर्य करते हैं।

2– अल्पकालीन अध्ययन :

आश्रम में छः छात्राओं और दो छात्रों को अध्ययन की सुविधा उपलब्ध करायी है। इनके रहने, भोजन और पुस्तकों का प्रबन्ध आश्रम में ही हुआ। ये सब छात्र अनुसूचित, पिछड़े और गरीब वर्गों के युवा हैं। ये आश्रम की गतिविधियों में शामिल होते हैं।

3– किसान पीठ :

- अप्रैल 2007 में चिरईगाँव ब्लाक के दस गाँवों में ओला वृष्टि से प्रभावित किसानों के साथ विस्तृत सम्पर्क किया गया। बभनपुरा में एक बड़ी सभा की गयी और कचहरी पर जाकर ज्ञापन दिया गया।
- 15,16,17 जून 2007 को किसानों की हरिद्वार पंचायत में भाग लिया गया। भारतीय किसान यूनियन की वाराणसी इकाई के साथ मिलकर रचना, संघर्ष और संगठन के दृष्टिकोण से किसानों में वितरित करने के लिए एक पर्चा तैयार किया गया।
- 9 दिसम्बर 2007 को चन्दौली में चौ. महेन्द्र सिंह टिकैत की रिहाई और खाद व पानी की आपूर्ति को लेकर हुए संघर्ष में भागीदारी की गयी।
- पीठ के कार्यकर्ता 2 जनवरी 2008 को बागपत के किसान प्रदर्शन में और संक्रान्ति के अवसर पर 17–18 जनवरी को प्रयाग में हुए किसान महा–सम्मेलन में शामिल हुए।
- मई से जुलाई 2007 के बीच किसान संगठन, युवा ज्ञान शिविर और लोकविद्या प्रतिष्ठा अभियान के तहत कुछ ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यकर्ता गये और वहाँ से थोड़ा–थोड़ा करके आश्रम के लिए अन्न संग्रह किया गया।

4–ज्ञान मुक्ति मंच :

- 27 मई 2007 को आश्रम पर युवाओं की एक बैठक में ज्ञान मुक्ति मंच का निर्माण किया गया। संतोष कुमार संविज्ञ को कार्यकारिणी समिति का संयोजक बनाया गया। यह इस धारणा के अन्तर्गत हुआ कि सरकारी नियमों, कम्पनियों के एकाधिकार और बाजार के चलन के चलते ज्ञान बँध जाता है और न उसका स्वच्छन्द विकास हो पाता है और न उससे लोकसेवा अथवा लोकहित के कार्य ही हो पाते हैं। इसलिए ज्ञान मुक्ति आवाहन के नाम से पर्चा निकाला गया और युवाओं को इस विचार पर एकजुट करने का प्रयास शुरू किया गया।
- 2 जून 07 को खालिसपुर , 3 जून को सरायमुहाना , 4 जून को कोटवाँ और ताँतेपुर, 5 जून को सिंहवार और 6 जून को नेवादा और हिरामनपुर में **लोकविद्या प्रतिष्ठा यात्रा** निकाली गई। इन गाँवों में और उनके पास के चौराहों व बाजारों में ज्ञान मुक्ति के विचार के प्रचार के लिए सभायें एवं जनसम्पर्क किया गया।
- 21–22 जुलाई 2007 को ज्ञान मुक्ति मंच ने आश्रम पर एक दो दिवसीय ज्ञान शिविर का सफल आयोजन किया। इसमें लगभग 75 युवाओं (10 लड़कियों) ने भाग लिया। शिविर के मुख्य वक्ता थे, सुनील सहस्रबुद्धे, डा. चित्रा सहस्रबुद्धे, दिलीप कुमार 'दिली', लक्ष्मण प्रसाद, रामजनम, संतोष कुमार संविज्ञ, डा. रघुवंशमणि पाण्डेय, अविनाश झा, (दिल्ली), राकेश सिंह (दिल्ली)। शिविर में दिये गये वक्तव्यों से एक पुस्तिका का प्रकाशन किया गया है।

  युवा ज्ञान शिविर के रूप में मंच का कार्य सतत आगे बढ़ रहा है। उसकी रिपोर्ट नीचे स्वतंत्र मद के अन्तर्गत की गयी है।
- 31 जुलाई 2007 को नरायनपुर, जिला मिर्जापुर, में वहाँ के कारीगर समाज के युवाओं के साथ ज्ञान और रोजगार के सवाल पर गोष्ठी की गई। आश्रम से परवेज, संतोष और स्वतंत्र कुमार गये थे।

5– युवा ज्ञान शिविर :

युवा ज्ञान शिविरों को आयोजित करने के लिये एक संयोजक मण्डल बनाया गया है। संयोजक मण्डल के सदस्य इस प्रकार हैं– डा. चित्रा सहस्रबुद्धे, दिलीप कुमार, लक्ष्मण प्रसाद, संतोष कुमार संविज्ञ। ज्ञान मुक्ति मंच के अन्तर्गत शुरू हुये युवा ज्ञान शिविर एक स्वतंत्र कार्यक्रम का आकार ले रहे हैं। एक तरफ कम्प्यूटर और संचार प्रौद्योगिकी के विकास और दूसरी तरफ गाँवों की बदहाली और शिक्षा का महँगा होना युवाओं के मन को बड़े पैमाने पर आंदोलित कर रहा है। युवा ज्ञान शिविर इस मानसिक आंदोलन से वैचारिक आंदोलन तक का रास्ता बुनने का प्रयास है। इन शिविरों में विशेषकर ग्रामीण युवाओं से वार्ता होती है। ये 10वीं पास होते हैं, 12वीं पास होते हैं, और कभी–कभी स्नातक और स्नातकोत्तर उपाधियाँ भी इनके पास होती हैं। इनसे ज्ञान के सवाल पर बहुमुखी चर्चा की जाती है। ज्ञान के प्रकार, ज्ञान के स्थान, ज्ञान का निर्माण, संगठन, प्रबन्धन, निजीकरण सभी पर चर्चा की जाती है। उत्पादन के विभिन्न क्षेत्रों के ज्ञान के शोषण और उस पर बाहरी नियंत्रण पर विशेष चर्चा की जाती है। इस चर्चा को ज्ञान के क्षेत्र में कम्प्यूटर द्वारा लाये गये तूफान और शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे बदलावों के सन्दर्भ में रखा जाता है। लोकविद्या व विविध ज्ञान परम्पराओं को शिक्षा में शामिल करने की बात की जाती है। ज्ञान और समाज परिवर्तन के बीच रिश्ते को समझाया जाता है। इन शिविरों की सूची नीचे दी जा रही है।

- 21–22 जून 2007 को विद्या आश्रम पर दो दिवसीय शिविर का आयोजन।
- 9 सितम्बर 07 को सिंहपुर में, 16 सितंबर को घुरीपुर में, 23 सितंबर को हिरामनपुर और 30 सितंबर को सुलतानपुर में एक–एक दिवसीय युवा ज्ञान शिविरों का आयोजन किया गया।
- 31 नवम्बर, 7 दिसम्बर और 8 दिसम्बर 2007 को क्रमशः तुलसी निकेतन विद्यालय, सारनाथ, खडेश्वरी इंटर कालेज, चाँदपुर और धर्मचक्र विहार स्कूल, मवइयाँ में हाईस्कूल–इंटर के छात्रों व शिक्षकों के साथ ज्ञान वार्ता आयोजित की गई।
- 30 दिसम्बर 2007 को रामचन्दीपुर गाँव (ढाब) में चन्दौली किसान यूनियन के सहयोग से एक दिवसीय युवा ज्ञान शिविर का आयोजन किया गया।
- 4 जनवरी 2008 को लोकमनपुर, जिला भदोही, में एक ग्रामीण ज्ञान शिविर का आयोजन हुआ।

6– चिंतन ढाबा :

मई 2007 में आश्रम के सभी कार्यकर्ता लगातार 15 दिन तक चिंतन वार्ता के लिये बैठे। विभिन्न सामाजिक, आर्थिक व दार्शनिक विषयों पर गंभीर चिंतन हुआ। इस चिंतन का एक नतीजा चिंतन ढाबा के रूप में सामने आया।

आश्रम की यह मान्यता रही है कि पूरे समाज का भला तभी हो सकता है, गरीबी और गैर–बराबरी को तभी समाप्त किया जा सकता है जब ज्ञान की प्रक्रियाओं में, सामाजिक चिंतन में सभी लोग शामिल हों। यदि चिंतन इंटरनेट, विश्वविद्यालय या अन्य संगठित संस्थानों में सीमित रहेगा तो विद्या के क्षेत्र में ऊँच–नीच रहेगी और ऐसी विद्या सामाजिक–आर्थिक ऊँच–नीच का हल भला कैसे दे सकेगी ? इसलिए ज्ञान की प्रक्रियाओं और चिंतन की वर्तमान सामाजिक अवस्थाओं को बदलने की दृष्टि से चिंतन ढाबा के नाम से एक प्रयास शुरू किया गया है। आश्रम चिंतन ढाबों का एक जाल बिछाना चाहता है जिससे क्षेत्र के लोग सामाजिक विषयों के चिंतन में शामिल हो सकें। ये ढाबे चाय–नाश्ते की दुकाने हैं जहाँ गम्भीर चिंतन का माहौल बनाया जाता है और आश्रम के कार्यकर्ता सामाजिक विषयों पर बहस खोलने का काम करते हैं।

आश्रम के ठीक सामने एक ऐसा चिंतन ढाबा अगस्त 2007 में शुरू किया गया। दस–पन्द्रह किलो मीटर के क्षेत्र में पाँच और स्थानों पर ये चिंतन ढाबे जनवरी 08 में शुरू हुए। ये स्थान हैं– पचकोसी चौराहा, गौराकलाँ बाजार, जाल्हूपुर बाजार, सृष्टि बाजार, और सलारपुर गाँव। आश्रम के सामने का चिंतन ढाबा सक्रिय है। सप्ताह में एक दिन शाम को कोई न कोई कार्यक्रम भी होता है जैसे संगीत, कविता–पाठ, चित्रकला प्रदर्शनी, पोस्टर अभियान, विचार गोष्ठी आदि। जिन विषयों पर वार्तायें चलायी जाती हैं उन्हें एक श्याम–पट्ट पर लिखकर ढाबे के सामने रख दिया जाता है। अभी तक ये विषय लिये गये हैं– शिक्षा वही जो गैर बराबरी दूर करे, क्या ज्ञान को बाँधा जा रहा है, इतिहास और राजनीति के बीच रिश्ता, किसान का शोषण और समाजिक बदलाव की अनिवार्यता, समाज में ज्ञान की सभी धाराओं को बराबर की प्रतिष्ठा का सवाल, मनुष्य के ज्ञान में लोकविद्या की बुनियाद इत्यादि।

आश्रम में यह विचार बन रहा है कि चिंतन ढाबा वैचारिक पुनर्निर्माण के महत्वपूर्ण और कारगर स्थल बन सकते हैं। इनकी संख्या बढ़ायी जानी चाहिए।

जनवरी 08 में एक चिंतन ढाबा बुलेटीन निकाला गया।

चिंतन ढाबा का संयोजन दिलीप कुमार 'दिली' करते है।

7– ज्ञान वार्ता :

कार्य करने की दृष्टि से 'समाज में ज्ञान पर वार्ता' को तीन भागों में बाँटा गया है। जन साधारण के बीच ज्ञान संवाद, विश्विद्यालय में ज्ञान संवाद और इंटरनेट पर ज्ञान संवाद।

- आश्रम के अधिकांश क्षेत्रीय कार्यक्रम जन साधारण के बीच ज्ञान संवाद के कार्यक्रम हैं। जैसे–चिंतन ढाबा, युवा ज्ञान शिविर, किसान पीठ आदि।
- इंटरनेट पर एक याहू ग्रुप ज्ञान संवाद चलाया जाता है। इसके संयोजक अविनाश झा हैं।
- एडू फेक्टरी (Edu-Factory) के नाम से इंटरनेट पर चल रहे अंतर्राष्ट्रीय संवाद में भागीदारी। इस वर्ष इसकक दो विषय हैं– विश्वविद्यालयों में और उनके द्वारा जनित ऊँच–नीच तथा स्वायत्त विश्वविद्यालय की कल्पना और रचना। इस संवाद में अविनाश झा, अमित बसोले और सुनील सहस्रबुद्धे विद्या आश्रम की ओर से हिस्सा लेते हैं।
- 'क्या कम्प्यूटर युग में ज्ञान को फिर से बाँधा जा रहा है ?' इस विषय पर 2 दिसम्बर 2007 को आश्रम पर दलित बुद्धिजीवियों और दलित संगठनों के कार्यकर्ताओं के साथ एक ज्ञान वार्ता का आयोजन।
- विश्व सामाजिक मंच के अन्तर्गत 14–15 जनवरी 2008 को इलाहाबाद में गंगा के तट पर **लोकविद्या सत्संग** का आयोजन।
- विश्व सामाजिक मंच के अन्तर्गत 25 जनवरी 2008 को आश्रम परिसर में चिंतन ढाबा के विचार और संगठन पर वार्ता।

8– राष्ट्रीय बैठक :

3–4 नवम्बर 2007 को आश्रम पर एक राष्ट्रीय बैठक का आयोजन हुआ। इस बैठक में आश्रम के विचार और कार्यक्रमों पर मौलिक चर्चा हुयी। दूर–दूर से आये सहयोगियों ने अपने विचार व्यक्त किये। ज्ञान संवाद और लोकविद्या अकादमी पर भावी कार्यक्रमों के रूप में चर्चा हुई। भाग लेने आये व्यक्तियों में अधिकांश ऐसे थे जो आश्रम को स्वैच्छिक वित्तीय सहयोग देते हैं। बैठक की एक रिपोर्ट अलग से बनाई गयी है।

9– आश्रम समिति की बैठक :

4 नवम्बर 2007 की शाम को आश्रम समिति की बैठक हुई। समिति का विस्तार किया गया। बैंगलोर से आये डा. जे. के. सुरेश, डा. कवि महेश, और विजय कुन्दाजी, हैदराबाद से डा. अभिजित मित्रा और डा. नरेश शर्मा, नागपुर से डा. गिरीश सहस्रबुद्धे और वाराणसी से प्रवाल कुमार सिंह और संतोष कुमार संविज्ञ को आश्रम समिति का सदस्य बनाया गया। समिति में 11 सदस्य पहले से थे। आश्रम समिति ही न्यास के सदस्यों की समिति है। इस बैठक में नये पदाधिकारियों का चुनाव किया गया और कार्यकारिणी और वित्त समिति का गठन किया गया। बैठक में आश्रम की नीति और कार्यक्रम तथा वित्त व्यवस्था पर विस्तृत विचार किया गया व जरूरी निर्णय लिए गये।

10– वेबसाइट :

आश्रम का दर्शन और उसकी गतिविधियों को संगठित और पठनीय रूप में सबके सामने रखने के लिए vidyaashram.org के नाम से एक वेब साइट बनाई गयी है। वेबसाइट का प्रबन्धन डा. अमित बसोले करते हैं।

11– अन्य स्थानों पर भागीदारी :

- 5 सितम्बर 2007 को नेगीपुर, मेंहदीगंज में लोक चेतना समिति के शिविर में डा. चित्रा सहस्रबुद्धे, आरती, दिलीप कुमार और संतोष कुमार की भागीदारी रही। उन्होंने वहाँ ज्ञान के महत्व को लोकविद्या दृष्टि से केसे समझा जाय यह रखा।
- 21–22 सितम्बर 2007 को धर्मचक्र विहार सारनाथ में शोषित समाज दल का राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ। इसमें सुनील, दिलीप कुमार, संतोष कुमार और लक्ष्मण प्रसाद ने भाग लिया।
- 28–29 अक्टूबर 2007को सासाराम में अर्जक संघ के राष्ट्रीय शिविर में भागीदारी। दिलीप कुमार, लक्ष्मण प्रसाद और संतोष कुमार ने हिस्सा लिया।

12– पुस्तकें एवं पर्चे :

- **पुस्तकें** : **ज्ञान की राजनीति पुस्तक माला** के अन्तर्गत निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित की गयीं।
  - (i) बौद्धिक सत्याग्रह
  - (ii) लोगों के हित की राजनीति और ज्ञान का सवाल
  - (iii) ज्ञान मुक्ति आवाहन
  - (iv) युवा ज्ञान शिविर

ये सब छोटी–छोटी पुस्तके हैं जिनमें विद्या आश्रम की विचारधारा को सुगठित और सटीक रूप में प्रस्तुत किया गया है।

- **पर्चे :**
  - (i) हरिद्वार किसान पंचायत (16–18 जून 2007)
  - (ii) ज्ञान मुक्ति आवाहन (जुलाई, 07)
  - (iii) ज्ञान मुक्ति मंच (सितम्बर, 07)
  - (iv) चिंतन ढाबा बुलेटिन (जनवरी, 08)

युवा ज्ञान शिविर
दिनांक 21 व 22 जुलाई 2007
RUN